तसर संवर्धन में समेकित कृषि प्रणाली

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
पिस्का नगड़ी, राँची - 835303 (झारखण्ड)

तसर संवर्धन में समेकित कृषि प्रणाली

तसर कृषक अभी तक अधिकतर कीटपालन वनों में उपलब्ध अर्जुन एवं असन के वृक्षों पर करते रहे हैं। बढ़ते जनसंख्या दबाव, औद्योगिकीकरण एवं भूमि की अनुपलब्धता के कारण वनों की कटाई बढ़ रही है। तसर संवर्धन को अधिक लाभदायक बनाने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि तसर रेशमकीट खाद्य पौधों के बगान न केवल स्वरोजगार के साधन हों वरन् धरती पर वनों की वृद्धि में भी सहायक हों।

विगत कुछ वर्षों से खाद्य पौधों के बागान लगाने का कार्य अनेक योजनाओं के अन्तर्गत सरकारी एवं गैर–सरकारी भूमि पर किया जा रहा है। रेशमकीट पालन हेतु तसर खाद्य पौधों का बाग चार–पांच वर्ष में तैयार होता है। इस दौरान बागान से कोई आय नहीं होती है तथा रख–रखाव पर व्यय करना पड़ता है।

पूर्ण विकसित बागान में भी एक वर्ष में एक या दो ही बार कीटपालन होता है तथा शेष समय बागान खाली पड़ा रहता है। इस कारण इकाई समय में इकाई भूमि से बहुत सीमित आय होती है। इन्हीं सब समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कृषि वानिकी की विद्या को अपनाकर समेकित कृषि प्रणाली विकसित की गई है।

खाद्य पौधों के बाग में अल्पकालिक कृषि फसलों को उगाकर अर्जुन/असन पौधों को उत्पादन की स्थिति तक पहुंचाने के दौरान आय प्राप्त की जा सकती है। पूर्ण विकसित बागान में प्रति इकाई समय में प्रति इकाई भूमि से अधिक आय ली जा सकती है। एक फसल के नुकसान होने की दिशा में दूसरी फसल से आय हो जाती है जिससे आय की सुनिश्चितता बनी रहती है। तसर कोसों तथा कृषि फसलों से होने वाली आय के अतिरिक्त ईंधन एवं पशुओं का चारा भी उपलब्ध हो जाता है। एकीकृत खेती से भूमि संरक्षण एवं भूमि सुधार के साथ–साथ उत्पादन में स्थिरता आती है।

समेकित कृषि प्रणाली की विधि

तसर बागान को लगाने व रखरखाव की विधि

समेकित कृषि प्रणाली अपनाने हेतु 10'x5' अथवा 10'x6' की दूरी पर रोपित अर्जुन/असन के बागान का चयन करें। तसर खाद्य पौधों का रोपण तथा रखरखाव संस्थान द्वारा संस्तुत उन्नत तकनीक का पालन करते हुए वर्षा आरम्भ होते ही कर देना चाहिए।

कृषि फसलों की खेती का समय, विधि व रखरखाव

- खाद्य पौधों के बागान में वर्षाकाल के दौरान उगाई जाने वाली दलहनी, तिलहनी व अन्य फसलों (अदरक, हल्दी, आदि) की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।
- कुछ मुख्य फसलें मूंग, उड़द, लोबिया, कुलथी, सरगूजा उपयुक्त पाई गयी हैं।
- मॉनसून की प्रथम वर्षा के समय ही 6000 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद/कम्पोस्ट को खेत में फैलाकर जुताई कर देनी चाहिए।
- लोबिया को अर्जुन/असन पौधों के बीच में कतार – से – कतार एक फुट व पौधे – से – पौधे के बीच 8 ईंच की दूरी पर बोना चाहिए। मूंग, उडद, कुलथी तथा सरगूजा को समान मात्रा में छिड़क कर बोना चाहिए।
- फसलों की बुआई के समय तसर खाद्य पौधों की कतारों की दोनों तरफ 1.5 फुट चौड़ी जगह छोड़नी चाहिए ताकि रेशमकीट पालन सम्बन्धी क्रियाकलाप सुचारू रूप से चलाये जा सके।
- तसर भोज्य पौधों तथा कृषि फसलों पर 15 दिन के अंतराल में 0.1% डाईमिथोयेट एवं 0.1% कार्बेनडाज़िम के घोल का छिड़काव करना चाहिए। यह छिड़काव रेशमकीट पालन प्रारंभ होने के 15 दिन पूर्व बंद कर देना चाहिए।

समेकित खेती में तसर रेशम कीटपालन

सितम्बर के प्रथम/द्वितीय सप्ताह में वाणिज्यिक रेशम कीटपालन प्रारम्भ किया

जाता है। चॉकी रेशम कीटपालन बागान के किनारे वाले पौधों पर करके तृतीय अवस्था में कीटों को अन्य पौधों पर फैला देना चाहिए। यदि चाकी बागान उपलब्ध हो तो चाकी कीट पालन चाकी बागान में करें।

समेकित खेती के लाभ

- अर्जुन/असन में पत्ती उत्पादन प्रति वृक्ष लगभग 6 कि.ग्रा. होता है।
- विभिन्न कृषि फसलों का अनुमानित उत्पादन (कि.ग्रा./हे.) इस प्रकार पाया गया है।

फसल	अनुमानित उत्पादन (कि.ग्रा./हे.)
मूंग	400
उड़द	400
लोबिया	600
कुलथी	300
सरगूजा	120

- समेकित कृषि प्रणाली अपनाने से लगभग 6 से 15 हजार रूपये तक अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है जो उगाई गयी फसल पर निर्भर करती है। यह आय कोसा उत्पादन से होने वाली आय के अतिरिक्त है।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
पिस्का नगड़ी, राँची - 835303 (झारखण्ड)

दूरभाष : 0651-2775815
फैक्स : 0651-2775629
ई-मेल : ctrticsb@gmail.com

तकनीकी योगदान

डॉ. गार्गी, वैज्ञानिक-सी
डॉ. राजेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक - डी

सम्पादन : डॉ. राकेश कुमार मिश्र, वैज्ञानिक-सी
डॉ. वरूण कुलश्रेष्ठ, वैज्ञानिक-सी